# अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

## तत्त्वज्ञान–(वर्ष–2018)

## द्वितीय वर्ष–द्वितीय प्रश्न पत्र

## नव–पदार्थ (जीव–अजीव)–40

समय:3 घंटा

दिनांक–30.08.2018

पूर्णांक–100

प्र01 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर एक दो लाईन में लिखें– 10

(जीव– किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दें)

(क) समकित का क्या अर्थ है?

(ख) जीव को जंतु क्यों कहा गया है?

(ग) जीव का नाम पुद्गल क्यों है?

(घ) रंगण का क्या तात्पर्य है?

(ड) जीव को वेद क्यों कहा गया हैं?

(अजीव– किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दें)

(च) धर्म अधर्म व आकाश की प्रदेश संख्या व माप का क्या आधार है?

(छ) काल का माप किस आधार से किया गया है?

(ज) षट द्रव्यों में पांच को अस्तिकाय कहा गया, मगर काल को नहीं, ऐसा क्यों?

प्र02 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दें– 10

(जीव– किसी एक प्रश्न का उत्तर दें)

(क) मानव का क्या अर्थ है? अथवा परिणामी नित्य से क्या तात्पर्य है?

(अजीव– किसी एक प्रश्न का उत्तर दें)

(ख) काल द्रव्य शाश्वत अशाश्वत कैसे है? अथवा
आकाश को गमन व स्थिति का कारण क्यों नहीं माना गया?

प्र03 निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तार सहित लिखें– 20

(क) जीव– भाव किसे कहते हैं? भाव के कितने प्रकार है? अथवा
सिद्ध करें कि आत्मा– शरीर और इन्द्रिय से भिन्न एक स्वतन्त्र द्रव्य है।

(ख) अजीव–धर्म, अधर्म और आकाश के लक्षण व पर्याय संख्या लिखें। अथवा
पुद्गल का क्या स्वरूप है?

### अवबोध– जीव से संवर–30

प्र04 किन्हीं सात प्रश्नों के एक शब्द या एक लाईन में उत्तर लिखें– 7

(क) पाप कर्म में चार स्पर्श कौन से है?

(ख) रति –अरति किसे कहते हैं?

(ग) अप्रमाद संवर कौन से गुणस्थान से प्रांरभ होता है?

(घ) संवर की स्थिति कितनी है?

(ड) लोक में जीव ज्यादा हैं या अजीव है?

(च) वर्गणा में चतुःस्पर्शी कितनी हैं और अष्टस्पर्शी कितनी?

(छ) क्या लोकाकाश का कोई भाग जीव रहित है?



Scanned by CamScanner

(ज) पाप की अवान्तर प्रकृतियां कितनी हैं?
(झ) अव्रत आश्रव कितने गुणस्थान तक है?

प्र05 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 8

(क) पाप की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति क्या है? व पाप का बंध कितने गुणस्थान तक होता है?
(ख) असंयमी को देने में पुण्य क्यों नहीं ? जबकि संयमी को अन्न आदि देने से पुण्य का बंध क्यों?
(ग) क्या ऐसे भी पुदगल है, जिन्हें देखकर जीव होने का भ्रम हो जाता है?

प्र06 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 15

(क) पुण्य बंध की इच्छा करनी चाहिए या नहीं, मोक्ष प्राप्ति में पुण्य साधक तत्त्व है या बाधक?
(ख) क्या पाप का बंध स्वतंत्र माना जा सकता है? तथा मिथ्यादर्शन को शल्य क्यों कहा गया है?
(ग) क्या सभी सम्यक्त्वी मनुष्यों के संवर होता हैं? व संवर औदारिक शरीर में ही होता है या अन्य शरीर में भी?

अमृत कलश भाग–3 (छठा, सातवां चषक– तप को छोड़कर)–30

प्र07 किन्हीं पांच प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दें– 5

(क) अंग अपांग किसे कहते हैं?
(ख) अतिशय शब्द से क्या तात्पर्य है?
(ग) साधु के कितने भव माने गए हैं?
(घ) धर्म मंगल किस दृष्टि से हैं?
(ड) अभवी साधुवेश क्यों स्वीकार करता हैं?
(च) तिरछे लोक की चौड़ाई कितनी है?
(छ) अधिगम सम्यक्त्व से क्या तात्पर्य है?

प्र08 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दो या तीन लाईन में लिखिए– 10

(क) क्या केवल ज्ञान प्राप्त करने वाले सभी तीर्थकर कहलाते हैं?
(ख) ज्ञान, दर्शन चारित्र– तीनों में प्रधानता किसको दी गई है?
(ग) सम्यक्त्व प्राप्ति के बाद जीव संसार में कब तक परिभ्रमण कर सकता है।
(घ) सामायिक व संवर में क्या अंतर है?
(ड) सामायिक का अधिकारी कौन हो सकता है?
(च) क्या सभी तीर्थंकरों के युग में प्रतिक्रमण दोनों समय किया जाता था?
(छ) तीर्थंकर केवल सिद्धों को ही नमस्कार क्यों करते हैं?

प्र09 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 15

(क) वीतराग की शरण क्यों स्वीकार की जाती है, जबकि वे हमारा भला बुरा कुछ भी नहीं करते?
(ख) अव्यवहार राशि से क्या तात्पर्य है?
(ग) श्रमणोपासक की धार्मिक दिनचर्या कैसी होनी चाहिए?
(घ) सिद्धों की उपासना के कौन–कौन से रूप हो सकते हैं?
(ड) सामायिक में लगने वाले मन के दोष कौन–कौन से हो सकते हैं? विस्तार से समझाएं।



Scanned by CamScanner